रिकार्ड– धीरज धर मनवा–––––––– ओमशांति प्रातःक्लास 16–7–67

मीठे2 सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। तुम बच्चों के जो भी जन्मजन्मांतर के दुःख हैं वो इस गीत की दो लाइनों के सुनने से ही दूर हो जाने चाहिए। तुम जानते हो कि अभी हमारा दुःख का पार्ट पूरा होता है और अभी सुख का पार्ट शुरू होता है। जो पूरी रीति नहीं जानते हैं वो किसी ना किसी बात में दुःख जरूर देखते हैं। यहां बाबा के पास आने पर भी कोई ना कोई प्रकार का दुःख भासेगा। बाबा समझ सकते हैं कि बच्चों को बहुत तकलीफ होती होगी। जब तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं तो कहीं2 पर भीड़ अधिक होती है तो भी बहुत तकलीफ होती है। तो कहते हैं कि यहां तो नाहक आये। बहुत भीड़ है। पछताते हैं बहुत भीड़ लग जाती है। बरसात लग जाती,तूफान लग जाता। जो भक्त होंगे वो तो कहेंगे कि क्या ––––है। भगवान पास जाते हैं। भगवान समझकर ही यात्रा पर जाते हैं। ढेर के ढेर हैं भगवान मनुष्यों के। ठिक्कर भित्तर में भी भगवान है। फिर जो अच्छे मजबूत होते हैं तो कहते हैं कि कोई हर्जा नहीं है। अच्छे काम में हमेशा विघ्न पड़ता है। वापस लौटकर थोड़े ही जावेंगे। कोई2 तो लौटकर भी आ जाते हैं। कब विघ्न पड़ता है ,कब नहीं भी पड़ता है। बाप कहते हैं बच्चों, यह भी तुम्हारी यात्रा है। तुम कहेंगे हम बेहद के बाप पास जाते हैं। बाप सबका दुःख हरने वाला है। यह निश्चय है?आजकल देखो मधुबन में कितनी भीड़ है। बाबा को ओना रहता है। बहुतों को तकलीफ भी होती होगी। जमीन में सोना पड़ता है। बाबा थोड़े ही चाहते हैं कि जमीन पर बच्चों को सुलावें ;परंतु ड्रामाअनुसार भीड़ हो गई है। कल्प पहले भी हुई थी। फिर भी होगी। इसमें कब भी दुःख नहीं होना चाहिए। यह भी जानते हो कि पढ़ाने वाला कोई तो राजा बनेगा, कोई तो रंक भी बनेगा। कोई का उंच मर्तबा, कोई का कम ;परंतु वहां सुख जरूर होगा। यह भी बाबा जानते हैं कि कई तो बहुत कच्चे हैं जो कुछ भी सहन नहीं कर सकते हैं। उनको कुछ तकलीफ होती होगी। कहेंगे हम तो नाहक ही यहां आये या कहेंगे टीचर हमको जोर करके ले आई है। ऐसे भी कहने वाले होंगे। टीचर ने नाहक ही यहां ला फंसाया है। इस समय की पढ़ाई से कोई तो राव बनने वाले हैं ,कोई तो रंक। भविष्य में बनेंगे। यहां के रंक राव में और वहां के रंक राव में रात–दिन का फर्क है। यहां के राव भी दुःखी हैं तो रंक भी दुःखी हैं। वहां राव से लेकर रंक तक सभी दोनों सुखी होते हैं। यहां तो है ही पतित विकारी दुनियां ना। भल किसके पास बहुत धन है। बाप समझाते हैं कि सब मिट्टी में मिल जाने का है। यह शरीर भी खतम हो जावेगा। आत्मा तो मिट्टी में नहीं मिलती। कितने बड़े2 साहुकार हैं बिड़ला जैसे। इनको क्या कहेंगे?बिचारा घोर अंधेरे में है। उनको क्या पता कि यह पुरानी दुनियां बदल रही है। पता होता तो फट से आ जाते। कहते भगवान आया हुआ है फिर हम यह मंदिर आदि क्यों बनावें?निश्चय होगा तो अच्छी रीति कोशिश करेगा जांच करने की। आने वाला भी जरूर है। कहां जावेंगे जबकि सदगति दाता है ही एक। भल–––यहां से तोबा भी कर जावे ;परंतु जावेंगे कहां?सिवाय बाप के कोई को सदगति मिल नहीं सकती। अगर कोई से रूठ गया तो कहेंगे सदगति से रूठ गया। ऐसे बहुत रूठते रहेंगे तो गिरते रहेंगे। आश्चर्यवत सुनन्ती निश्चय होवंती––––––कोई तो समझते हैं कि इन बिगर कोई रास्ता नहीं है। उनसे ही सुख और शांति का वर्सा मिलेगा। इस बिगर सुख–शांति मिलना असम्भव है। जब धन हो जो बहुत सुख मिले। धन से ही सुख होता है ना। वहां (शांतिधाम)तो आत्मायें शांतिधाम में रहती हैं। कोई कहे हमारा पार्ट होता तो सदैव हम यहां रहते ;परंतु ऐसे कहने पर थोड़े ही होता। बच्चों को समझाया गया। फिर बना बनाया खेल है। बहुत हैं किसी ना किसी संशय में आकर छोड़ जाते हैं या आपस में रूठकर छोड़ देते हैं। अब तुम यहां––––बनने आये हो। महसूस करते हो कि बरोबर हम कांटों से फूल बन रहे हैं। फूल जरूर बनना है। कोई को कुछ संशय होता है तो आपस में लड़ पड़ते हैं। आपस में कोई की अनबन हो जाती है। फलानी यह करती है, यह ऐसी है। इसलिए ही हम नहीं आवेंगे। –––रूठकर जाकर घर में बैठ जाते हैं। बाप कहते हैं और

कोई से तो भल रूठो, एक बाप से नहीं रूठो। बाबा तो वार्निंग दे देते हैं। सजायें तो बहुत कड़ी हैं। गर्भ में भी जो सजायें मिलती हैं वो भी सा. होकर ही मिलती हैं। बिगर सा. के सजा मिल नहीं सकती। यहां का भी सा. होगा। तुमने पढ़ते2 आपस में लड़ाई–झगड़ा लड़कर पढ़ाई छोड़ दी। तुम बच्चे समझते हो कि हमको फादर से पढ़ना है। पढ़ाई कब छोड़नी नहीं है। तुम यहां पर पढ़ते ही हो मनुष्य से देवता बनने। ऐसे उंच ते उंच बाप के पास तुम मिलने आते हो। कब फिर जास्ती भी आ जाते हैं। ड्रामा अनुसार कुछ तकलीफ हो पड़ती है। बच्चों को अनेक तूफान आते हैं। फलानी चीज नहीं मिली ,वो तो कुछ भी नहीं है। मौत का समय जब आवेगा तब क्या होगा?इस पिछाड़ी के (पार्ट) को ही कहा जाता है खूनी नाहक खेल। अचानक बाम्ब्स गिरेंगे। ढेर के ढेर मरेंगे। यह खूनी नाहक हुआ ना। हमने कोई गुनाह थोड़े ही किया है। खूनी नाहक तो बहुत होगा। अज्ञानी मनुष्य तो ऐसे ही कहेंगे। तुम बच्चों को बहुत खुशी है। कहते भी हैं ब्र.कु.कु. हैं ही दुनियां का विनाश करने के लिए। सच्च2 तुम विनाश के लिए ही निमित्त बनी हो ना। अनेक धर्मों का विनाश ना हो तो स्थापना ही कैसे हो। सतयुग में एक आदि सनातन देवी देवता धर्म था। किसी को क्या पता कि सतयुग की आदि में क्या था। वो तो –––समझते हैं ना। अभी तुम जानते हो कि सतयुग के आगे कलियुग था और यह संगमयुग है। इस संगमयुग को तुम्हारे सिवाय और कोई भी नहीं जानते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाप आये ही हैं सबको पुरुषोत्तम बनाने। सबका बाप है ना। ड्रामा को तो तुम जान गये हो ना। सब तो सतयुग में नहीं आवेंगे ना। इतने 500करोड़ थोड़े ही सभी सतयुग में आवेंगे। यह सब है डिटेल की बातें। बहुत बच्चियां हैं जो कुछ भी समझती नहीं हैं। भक्तिमार्ग की आदत पड़ी हुई है। ज्ञान बुद्धि में बैठता ही नहीं है। बहुतों को आते हुये देखकर चल पड़ते हैं। टीचर भी कहती है कि चलकर देखो तो सही ना। यहां आये और (आराम) करने की पूरी जगह नहीं मिली तो कहेंगे कहां हमको ले आई है। यह सब होता है। ड्रामा में नूंध है। बाबा किनको बुलाते थोड़े ही हैं। इसको (कहा) जाता है ड्रामा। भक्तिमार्ग की टेव पड़ी हुई है। कहते हैं कि भगवान क्या नहीं कर सकते हैं। मरे हुये को जिंदा कर सकते हैं। बाबा के पास आते हैं, कहते हैं फलाने ने मरे हुये को जिंदा किया। तो क्या ऐसा भगवान नहीं कर सकता है?कोई ने अच्छा काम किया तो बस उसकी ही महिमा करने लग जाते हैं। फिर उनके हजारों फालोवर्स बन जावेंगे। शंकराचार्य आदि पास कितने लाखों मनुष्य जाते हैं। कहते हैं फलाना गीता पर भाषण करता है तो कितने ढेर आते हैं। तुम्हारे पास तो बहुत थोड़े आते हैं। भगवान पढ़ाते हैं फिर भी इतने थोड़े से क्यों?ऐसे बहुत कहते हैं। अरे, यहां तो मरना होता है ना। वहां तो कनरस है। बड़े भभके से बैठकर गीता सुनाते हैं। भक्त लोग सुनते हैं। यहां कनरस की बात नहीं। तुमको तो सिर्फ कहा जाता है कि बाप को याद करो और 84का चक्र बुद्धि में रखो। बस। हम अभी वापस जाते हैं। रोज2 समझाते रहते हैं कि सिर्फ बाप को याद करो। गीता में भी यह अक्षर है कि मनमनाभव। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं कि अच्छा, ब्राह्मणी से वा सेंटर से रूस कर जाते हो। अच्छा, यह तो एक काम करो कि और संग तोड़ अपने को आत्मा समझ बाप संग जोड़। ये निश्चय कर फिर चले जाओ विलायत फिर भल कब आओ भी नहीं। वहां ही बैठे हुये सिर्फ एक बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ही पतित–पावन है। बस, बाप को याद करते रहो। स्वदर्शन चक्र फिराओ। इतना याद किया तो भी स्वर्ग में जरूर आवेंगे। बाकी पद तो पुरुषार्थ अनुसार ही मिलना है। प्रजा भी बनानी पड़े। नहीं, तो राजाई किस पर करें। जो बहुत मेहनत करते हैं उंच पद भी वो ही पावेंगे। उंच पद के लिए ही कितना माथा मारते हैं। पुरुषार्थ बिगर कोई भी रह नहीं सकते। तुम बच्चे जानते हो कि उंच ते उंच पतित–पावन बाप ही है। मनुष्य महिमा भल गाते हैं ;परंतु अर्थ नहीं समझते हैं। अनर्थ ही निकालते रहते हैं। भारत कितना साहुकार था। बहुत महिमा थी। भारत है स्वर्ग ऑफ वर्ल्ड। वो सात वंडर्स हैं माया के। सारे ड्रामा में उंच ते उंच –––है स्वर्ग। उंचे ते उंचा भगवान फिर उंचे ते उंचा

स्वर्ग है। नीच ते नीच है नर्क। बाप ही नीच ते नींच से फिर उंचे ते उंचे ले जाते हैं। अभी तुम बाप के पास आये हो। जानते हो कि मीठा बाबा जो उंचे ते उंचा ले जाते हैं उनको कौन छोड़ेगा?भल कहीं भी बाहर में जाओ सिर्फ एक बात तो याद करो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप ही श्रीमत देते हैं। भगवानोवाच्य। ना कि ब्रह्मा भगवानोवाच्य। मनुष्य तो बातें बनाते रहते हैं। ड्रामा में सबसे जास्ती बातें बनाने वाला कौन?व्यास भगवान। क्या2 बातें बैठ बनाई हैं। पवन से हनुमान पैदा हुआ। गणेश हाथी की सूंड़ वाला। अब मनुष्य वो भी फिर हाथी की सूंड़ वाला कहां से आया?असम्भव बातें हैं। मनुष्य कितना खर्चा करते हैं। सब मनुष्यों का खर्चा मिलाकर करोड़ खर्चा हो जावे। बेहद का बाप तुम बच्चों से पूछते हैं कि मैं तो तुमको इतना साहुकार बनाकर गया फिर तुमने इतनी दुर्गति को कैसे पाया?सुनते तो ऐसे हैं जैसे कुछ भी सुनते नहीं हैं। तो बच्चों को थोड़ी तकलीफ होती है। तुम बच्चों को थोड़े ही तकलीफ होती है। सुख–दुःख,स्तुति,निन्दा यह सब सहन करना पड़ता है। शिवबाबा को तो कोई कुछ कर नहीं सकते हैं। यहां के तो मनुष्य ही (ऐसे) हैं। प्राइममिनिस्टर को भी पत्थर मारने में देरी नहीं करते हैं। कहते हैं स्कूल के बच्चों का न्यू ब्लड है। बाकी महिमा करते हैं उनकी। समझते हैं कि इन लोगों का न्यू ब्लड है ;परंतु वो ही स्टुडेंट्स दुःख देने वाले निकल पड़ते हैं। कालेजों को आग लगा देते हैं। यह तो जैसे कि बिच्छू–टिंडन है। कामी कुत्ता भी कहते हैं ना। सब नाम आ जाते हैं। एक–दो को गाली देते रहते हैं। कोई जज ने कहा अरे, गधे के बच्चे! उसने कहा कि हम गधा तो बाप भी गधा ही ठहरे। कोई सयाणा बच्चा हो तो फट से बाप को कह देंगे कि आप कहते हो कि गधे का बच्चा हो?यह तो आप अपने को ही गाली देते हो। तो बाप बैठ समझाते हैं कि दुनियां का क्या हाल है?बाप कहते हैं कि तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो। बाबा ने कहा था कि तुम यह लिख सकते हो कि ड्रामा का एक्टर होकर और वो ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को, मुख्य एक्टर को नहीं जाने तो ईडियट ठहरे ना। यह है बेहद की बात। बड़े ते बड़ा कौन?उसकी बायोग्राफी जाननी चाहिए ना। कुछ भी नहीं जानते। ब्र.वि.शं. का क्या पार्ट है और धर्म स्थापक का क्या पार्ट है। मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। मनुष्य तो सब अंधश्रद्धा में आकर सबको ही परसेप्टर कह देते हैं। वास्तव में तो परसेप्टर गुरू को कहा जाता है ना कि धर्मस्थापक को। मनुष्य तो सबको गुरू कह देते हैं। सर्व का सदगति दाता तो एक ही परमपिता परमात्मा है। वो परमगुरू भी है। फिर नालेजफुल भी है। तुम बच्चों को पढ़ाता भी है। उनका पार्ट ही वंडरफुल है। धर्म भी स्थापन करते हैं तो सब धर्मों को खलास भी करते हैं। स्थापना और विनाश करने वाले को ही गुरू कहेंगे। बाप कहते हैं कि मैं कालों का काल हूँ। एक धर्म की स्थापना और बाकी सब धर्मों का विनाश हो जावेगा अर्थात् इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जावेंगे। फिर ना कोई लड़ाई लगेगी ना ही यज्ञ रचा जावेगा। तुम सारे विश्व की आदि,मध्य,अंत को जानते हो। और तो सब नेति2 कहते रहते हैं। तुम ऐसे ही थोड़े ही कहेंगे। बाप बिना और कोई समझा नहीं सकते। तो तुम बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए ;परंतु माया का सामना ऐसा होता है जो याद से हटा देता है। तुम बच्चों को तो दुःख,सुख,मान,अपमान ;वैसे तो कोई का यहां अपमान किया नहीं जाता है। अगर कोई भी (बात) है तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। रिपोर्ट नहीं करते हैं तो बड़ा पाप लगता है। बाबा को सुनाने से झट उनको सावधानी मिलेगी। इस सर्जन से छिपाना नहीं चाहिए। बड़ा भारी सर्जन है। ज्ञान इंजेक्शन जिसको ही ज्ञान अंजन भी कहते हैं। अंजन को ज्ञान सुरमा भी कहते हैं। जादू आदि की तो बात ही नहीं है। बाप कहते हैं कि मैं आया हुआ हूँ तुमको पतित से पावन होने की युक्ति बताने। पवित्र नहीं बनेंगे तो धारणा भी नहीं होगी। ऐसे काम के कारण ही फिर पाप होते हैं। इस पर ही जीत पानी है। अच्छा, विदाई।